1. धन्य तेरी करतार कला का पार नहीं कोई पाता है ~~है~~ । टेक
निराकार होकर के स्वामी सबका पालन करता है ।
निराकार निरबंधन स्वामी , जनम-मरण नहीं धरता है ।
ऋषि-मुनि और संत महात्मा , निशदिन ध्यान लगाता है ।।
चार खान चौरासी के माही , तू नहीं नजर एक आता है ।
तेरी लीला का खेल निराला , बिरला मेहरम पाता है ।।
जापर कृपा भई निज तेरी , वाको दरश दिखाता है ।
पत्ते-2 पर रोशनी तेरी , बिजली सी चमक दिखाता है ।।
थकीत भया मन-बुद्धि तेरी , जीवादास गुण गाता है ।
धन्य तेरी करतार कला का ....

==

2. गुरू बिना कैसे पावोगा रे , करो अगम-निगम की सैर रे । टेक
रे हां के ~~भई×रे×नहीं~~ भाई रे नहीं सड़क नहीं झकड़ा वहां है ।
नहीं है झीनी-2 गैल-गैल कहां पावोगा रे करो अगम-निगम की सैर रे ।
हां के भाई रे नहीं बैंड नहीं बाजा , वहां है नहीं ~~छत्तीस्या~~ छत्तीस्या राग
राग कहां पावोगा रे ।
हां के भाई रे नहीं महल नहीं खंबा,वहां ~~नहीं~~ है नहीं धरनी आकाश ~~वहां~~
वहां-कहां जावोगा रे ।
करो अगम-निगम की सैर रे ।
~~हां×के~~ हां के भाई रे नहीं सूरज नहीं चंदा , वहां है नहीं झिलमिल जोत ,
जोत कहां पावोगा रे ~~रे~~ । करो अगम-निगम की सैर ....
हां के भाई रे कहे कबीर घट नूरा वो है , म्हने सतगुरू मिल गया पूरा-परम
पद पावोगा रे ~~रे~~ । करो अगम-निगम की सैर रे ।

==

3. गुरू सरी का देव मेरे मन में भावे-2
गुरू काटे करम डोर परम पद पावे ।।
यही गुरू की सैन समझकर ध्यावे ।
वो नर चतुर सुजान , परम पद पावे ।।
इंगला-पिंगला नार सुखमना को ध्यावे ।
अर्ध-उर्ध का माय मान ठहरावे ।।
एक अखण्डी रामचराचर ध्यावे ।
सकल ब्रम्ह का माय वेद न्यूं गावे ।।
बोले ईश्वरदास भरम ने भगावे ।
शीतल शब्दा या माया जीव सुख पावे ।।

==

4. इनी काया नगर के माय अमी रस टपकन्ता ।
इनी भँवर के माय अमी रस टपकन्ता ।।
बारह बोदा , सोलह सौदा तिरवेणी * टपकन्ता ।
घर तीरथ की गम न पाये , बाहर क्यों भटकन्ता ।।
पाँच ने मारी पच्चीस ने पीलो , घाट-2 नर बूढे बंदे ।
अनघड़ देव की करलो सेवा , स्वासत-स्वाँस रटन्ता ।
बंकनाल की सूझ पकड़ लो , आठ कंवल दरशंता ।।
चाँद-सूरज न थम कर राखो , मोती-मुगध चढ़ंता ।*
पितरम प्यारा जूग से न्यारा , ऐसी घाट घड़न्ता ।।
भादौ शरण मयाराम बोले , सुना गढ़ जाइने चढ़ंता ।।

==

5. सतगुरू दाता दीन दयाला , कर किरपा अब तारो मुझे करूं बंदगी ,
गुरूदेव की भव से कर दो पार मुझे । टेक
भवसागर दरियाव भरा है * , लंबी धारा दिखे मुझे ।
लोभ-लालच की भंवर पड़त है , न्हाने को धिक्कार मुझे ।।
अर्ध-उर्ध की नाव बना लो , वा में पकड़ बैठा लो मुझे ।
सत के साथी है खेवटिया , पकड़ हाथ बैठा लो मुझे ।।
चार खूट और चौदर भवन में , सब में जानू सरदार मुझ मुझे××× तुझे ।
अखण्ड जोत का दरशन मुझ पाया , मिली गया करतारx मुझे ।। टेक ।। म
गुरू मुच्छंदर पूरा मिली गया , जिन ने दी टकसार मुझे ।
गोरखनाथ , गुरूनाथ गुरू की शरण में , क अमर परा लिखवाया मुझे ।।

==

6. संतों अमल करे सो पावे , बिन समझे क्या पावे ।
जैसे सुराही लिये हाथ में , पल-2 दरस दिखावे ।।
औरन आगे करत उजरो , आप अंधेरे जावे ।। टेक
बनी समाध रूपी घट भीतर , दिलवर दिल ही मिलावे।
चढ़ो नासो उतरे न कबहुं नैनन बिच रखावे ।। टेक ।।
बाचो पोथी अरथ उचोर , जग को कथा सुनावे ।
जानत नाहीं कहां हम जैसे , घर जरे धूर बतावे ।। टेक ।।
ध्रुव पृहलाद नामदेव छाके , मुरदा गद्दे जिवावे ।
कहे कबीर देख सदना को , एक घरे सुलावे ।। टेक ।।

==

7. तेरी काया नगर का कौन धनी मारग लूटे पाँच धनी ।। टेक

पाँच-पचीस ने रोका बाटा , साधु चढ़ गयो औघट-घाटा ।।

जाय लिया उन उबठ बाय जो न उबरो आप धनी ।

आशा-तृष्णा नदिया भारी , बाटे गये संत बड़े ब्रम्हचारी ।
जो उबरे सो शरण तुम्हारी , सिर पर चमके शेल धनी ।। टेक ।।
शंकर लुट गये नेजा धारी , उनकी नैयत कौन विचारी ।।
त्रिदेवा लुटे सब झारी , चमके रजगुण तीन धनी ।
बन में डस लिये मुनिजन नागा , इसलिये ममता उठ-2 भागा ।
जाका कान गुरू न उरगा , श्रृंगी-ऋषि आन बनी ।
मारग वाका पंथ दुहेला , रामानंद फिरे तट मेलन ।
साहेब कबीर देत जहाँ हेला , सुनिये सिरजन आप धनी

==

8. गुरू बिना कोई काम नी आवे , कौन अभिमान मिटावोगा । संतो ......
जतन-2 करि सूत को रे पाले थाने अनेक लाड़-लड़ाओगा ,
तन की लड़की तोड़ चला है थारा तन का लापा लगाया है ।
तू तो कहे नारी संग चलेगा , ठगनी तो ठग-2 खावे है ।।
अंत समय मुख मोड़ चली है थाने तनिक साथ नहीं देवे है ।।
गुरू बिना ....
कोड़ी रे कोड़ी माया जोड़ी,जोड़ी के महल बनाया है ।
अंत सम तोहे बहार कर दियो , तनिक रटन नहीं पाया है ।।
कहे कबीर सुनो भाई साधौ , थारा सतगुरू बंध छुड़ाया है ।।

==

9. चार वेद और पुxxx पुरान अठाहरा , ब्रम्हा ने पाया पार नहीं ।
निराकार निज धारा निरंजन , उनका कोई आकार नहीं ।। टेक ।।
वो मालिक तो आप ही आप में , उनका कुटुंब परिवार नहीं ।*
उनके नाम का भारा समुंदर , उस सागर का पार नहxx न नहीं ।।
वो चादर तो बनी नूर की , उस चादर में तार नहीं ।
तार-2 संसार उलझ गया , भूलो करे इतवार नहीं ।।
वो साहेब घट-2 की जाने , परघट को जूझार नहीं ।
उनके नाम की जप लो माला , पड़े काल की मार नहीं ।।
कहे कबीर सुनो भाई साधौ, गाने टकसार नहीं ।*
चरण-कमल की ऐसी महिमा , बिन दरसन दीदार नहीं ।।

===

10. जो तू आया गगन मण्डल से , शीश दिया फिर डरना भी क्या ।
हो जा होशियार सदा गुरू आगे , मनसा बीच फिर डरना भी क्या ।। टेक
उनमुन खेती धनी आगे , खेती रात-दिना नर सोता भी क्या ।
आयेगा पंछी चुग जायेगा xxxx खेती , रात-दिना नर सोता भी क्या ।।
नौ सौ नदिया बहे घट भीतर , सात समंदर उण्डा भी क्या ।*
गुरू-गम होद भरा घट भीतर , मूर्ख प्यासा जाता क्या ।।
तेरे घर में नार सुखमना , वेश्या के घर जाता भी क्या ।*
शीतल वृक्ष की छाया छोड़कर , कंकड़ पत्थर सोता भी क्या ।।
चित-चौपट का खेल मंडा है , रंग पल्ला जो पाूंचों का ।
गुरू-गम पासा लिया हाथ में , जीती बाजी फिर हरना क्या ।।
कासा, पीतल का सोना बना है , पल्ला लगा कोई पारस का ।*
कहे कबीर सुनो भाई साधौ, करम-भरत बिच भूला भी क्या ।।

===

11. राणाजी अब न रहूँगी , तोरी हटकी ।

साधु , संग मोहि प्यारा लागै , लाज गई घूँघट की ।।

पीहर मेड़ता छोड़ा अपना , सुरत-निरत दोऊ चटकी ।

सतगुरू मुकर दिखाया घर का , नाचूँगी दे-दे चुटकी ।।

हार-सिंगार सभी ल्यो अपना , चूड़ी करली पट की ।

मेरा सुहाग अब मोकु दरसा , और न जाने घट की ।।

महल किला राणा मोहे न सोहें , सारी रेसम पटकी ।

हुई दिवानी मीरा डोले , फेरू लटा सब छींट की ।।

राणाजी अब न रहूँगी , तोरी हटकी ।

---

12. ऐ जी गुरूजी ने दिया अमर नाम गुरू सरका क्यों नहीं ।

जी न भरिया खजाना पुर , कमी तो कुछ नहीं ।।

मेरा पिछवाड़े अमरबेल डाला , गम न गया जारी मालन छीछ्गा ,

अमरबेल कुवा मारा रस । ऐसा जागो जखपतीराज हंसी ने बोल क्यों नी ।

तम बसो नी इना हिरदा में कपट सोलो क्यों नी ।।

गुरूजी खरचा नी खरचा , जलया जीता नही जले ।

नुगरो कई जाने रेन इंदारी , कई तो जेमे भान में ।।

गुरूजी उगी आशा बलिहारी , भान में चंदा वो तारा छिपी गया

ऐसा जोग भीन तज नाम सब दबी गया ।। टेक ।।

गुरूजी छोरा सा पेंड़ नजर का , छांव में बैठो हंस कैसो ,

उड़जा-2 समन केड़ा पंख ,गड़पड़ - गड़पत देव ।।

---

13. सकल हंसन में राम हमारा , राम बिना कोई धाम नहीं ,
अखण्ड ब्रम्ह में जोत का बासा , राम को सुमरा दूजा नहीं ।। टेक ।।
तीन गुण में तेज हमारा , पाँच तत्व पे जोत जले -2 ।
जिनका उजाला चौदह लोक में , सुख डोर आकाश चढ़े ।। टेक ।।
हीरे-मोती , लाल जवाहरात , प्रेम पदारथ परखो यही-2
साँचा मोती निरखत लेना , राम धनी से म्हारी डोर लगी ।। टेक ।।
नाभि कमल से परखत लेना , हिरदे कमल बिच फिरे मणी -2
अनहद बाजा-बाजे शहर में , ब्रम्हाण्ड पर आवाज पड़े ।। टेक ।।
हरिजन होय तो जप लो घट में , बाहर जग में भटको मति -2
गुरू शरणे गुरू नानक बोले , घट में बोले कोई दुजा नहीं ।। टेक ।।

==========

14. या गाड़ी म्हारा देश की , जामें सतगुरू बैठा रे ।
नेम-धरम की गाड़ी बनाई ने , सतरा बलध्या रे
या गाड़ी जब चलन लागी , कैसे चले री गोरी ।।
दूर देश की गाड़ी रे भाई ने मजल पड़ेगी री ।
दूर देश में संग न साथी,रेणा अकेला री ।।
ओग घाट की टेसण ऊमर , तेल मिलेगी री ।
शीश काट चरणों में रख दे,टिकिट मिलेगा री ।।
कहे कबीर सुनो भाई साधो , मेरम न जाने रे ।
या गाड़ी म्हारा देश की , जामें सतगुरू बैठा रे ।।

==========

15. चैत की चिंता म्हाने गुरू बिन कौन मिटावे ।
ओर दवाई म्हाने दोय नी आवे म्हाने गुरू बिन कौन मिटावे ।।
जब-2 याद करूँ हृदय में , म्हाने पके-2 याद सतावे ।।
बैसाक में भँवरा जो भटके , बाग नजर नहीं आवे ।
खिल रहे फूल लिपट रहीं कलियाँ , भँवर बाँस न लेवे ।।
जेठ तो गर्मी को महीनो , जीव घणो दुःख पावे ।
आप साहेब सागर में समाणा , म्हाने मिलिया से आनंद आवे ।।
गुरू सा. ..... टेक
आषाण में आशा म्हाने लागी , और इंद्र चढ़ आवे ।
मूसलधार बरसो म्हारा स्वामी , धेनु धावे घर आवे ।।
सावन में साहेब घर आवे , सखियन मँगल गावें ।
आनंद मंगल बधावा रे गावे , म्हारा सतगुरू को आन बधावे ।
गुरू सा. .... टेक
भादो तो भक्ति को महीनो , सतगुरू सेण बतावे । टेक

---

16. मनक जमारा रो यही को योही मोड़छो ।
अरे बणे चौरासी को लपेड़ो बना रे कर सुमिरन थारे आड़ो ।।
पाप कपट के धरम से काटो , ज्ञान को करवे कुराड़ो ।
काटिया-बाल्या तो फिरी फुटेगा , जड़ा मूल से उखाड़ो ।।
लेते-देते टाँग पफसारे , कई भर लई जावे गाड़ो ।
लियो-दियो तेरी संग जायेगा , जैसो दसेरा को पाड़ो ।।
घर की तिरिया से राजी-2 बोले , मात-पिता से बोले आड़ो ।
घर की तिरिया और मिलेगा , मात-पिता को कई आड़ो ।।
सात सून पर महासून है , जहाँ सायब मेरो ठाड़ो ।
कहे कबीर सुनो भाई साधौ , सतगुरू मिले अगाड़ो ।।

---

17. साधु-सबध में कणियारी रे भाई-2
बिना डोर जल भरे कुवा पे बिना शीश की पणियारी ।।
भव ×बिना खेत, खेत बिना बाड़ी , बिन जल रेंट चले भारी ।
बिना डोर जल भरे कुवा पे , बिना शीश की पणियारी ।।
बिना माली एक बाग लगायो , बिना पत्ता की बेल चली ।
बिन चोचरो आयो मिरगालो , चुगी गया सब कली ।।
लेकर धनुष धनुष चला शिवधारी , उस धनुष पर चाप नहीं ।
मिरगा मार धरण पर धरिया , नहीं मिरगा के ×× चोट लागी ।।
बिन अन्न-जल बहु×× बऊ भोज बनावे , सास-ननद को बऊ प्यारी ।
भोजन देख भूख भागी, पिया की चतुर नार की चतुराई ।।
बिन सस्तर से लड़े सिपाही , कतल करे दोनो भाई ।
कहे कबीर सुनो भाई साधौ, अमरापुर में जावे सरी ।।

==

18. थारा मनक मन के समझाई ले लीजे ।
दारू मत पीजो बीरा , नशा घणो आवे ।
बीड़ी मत पिजो बह×बीरा , नशो घणो आवे है रह ।।
तम सत का प्याला कैसे पिवोगा व वेद पुराण की गठरिया मत बांदो ×× हो जी
अरे थारा मूल हाथ नहीं आयो है , कोरी-2 आँख में काजला मत आंजो हो जी ।
थारी में ×××× नारो रूप की गाड़ी री ।
हाथ माचे दीवालो ×××× दुफारी , री मे नहीं सूझे है जी ।
अब तुम अंधारी रेन में कैसे जावोगा री ।।
पराई नारी की सँगत मती करना है होजी ।
अरे थारी लखीणी में दोई में दाग लागे हैं ।
बड़े भाई की नारी मात , कर यानो हो जी ।।
थारी जिंदगी सफल हुई जावेगा री ।
दोई कर जोड़ जती रूपा रानी , बोले है जी ।
या तो थारी हुकमजी की चेली म्हारा राज ।

==

52. आतो घट और है, भाई साधो गुरू बिन पावोगे नाई । टेक
नहीं ज्ञान नहीं ध्यान, नहीं कोई रेणी करनी ।
नहीं भेक नहीं टेक, नहीं कोई तरणा-तरणी ।।
जती-सती मुनि नहीं, नहीं सिद्धक नहीं साधक ।
बिन सतगुरू की सेन बिना, नहीं छूटे है पावक ।।
नहीं बीज व खोज, नहीं वह सोहंग सांसां ।
कोण-2 नर गया,कोण ने,कीना वासा ।।
हद-बेहद दोनें नहीं,नाम-ठाम भी नाय ।
अब समरण किसका कर जी, कुछ भी दीखत नाय ।।
नहीं पिरथी नहीं पावक, नहीं वहां सायब सुंदर ।
नहीं दिवस नहीं रेन, नहीं वहां सूरज-चंदर ।।
मुरजीवा का देश है, मुरजीवा ही जाय ।
अभिमान छूटा बिना रे, तुरंत काल खा जाय ।।
धरो किसी का ध्यान,कहो जी कौन बताया ।
खंड-पंड भी नाहीं रंग, वहां-कहां से आया ।।
सून शिखर दोनों नहीं, न अजपा का जाप ।
तू मूरख भटकत फिरे, तुझ में आपो ही आप ।।
नहीं आवे नहीं जाय, नहीं कोई करे मरे न जनमे ।
सतगुरू जाने भेद दयामय, कोयक सजह में ।।
काल अमल व्यापे नहीं, ऐसा अपरम्पार ।
कहे कबीर सुनेरे संतो, अखण्ड है भरतार ।।

==========

53. ओ तो घट बेनामो बेगामो । टेक
ज्ञान-ध्यान जप-तप नहीं साधन, वेद कुरान नहीं बाणी ।
छः राग छत्तीस रागणी, असब काल खबाणी ।।
आवे न जाय मरे नहीं न जनमे,पड़े नहीं मुखबाणी ।*
को मैं किसका नूर बखाणू, दुनिया तो भरम भुलाणी ।।
है नहीं रँग-रँग नहीं वाके, ऐसी अदल छपाणी ।
दिसट-मुसट आवे नहीं, सजना माय तो फिरे दिवानी ।।
है वो अथा थाग नहीं वाका, कोई विरला जन जाणी ।
कहे कबीर सुनो भाई साधौ, आ है मुगत निसाणी ।।

==========

54. ओ घट ऐवा कहिये, ज्यों को पकड़ थिर रहिये । टेक
घर से अघर-अघर से आगे, हद-बेहद से ऊंचा ।
नाद-बिंद वहां कछु कछुह न पूगे, वोही ठौर फिरे मन पूछा ।।
बिना नैन में सब जुग देखा, बिन सरवण सुनी बानी ।
बिन जीविया का खटरस भोजन, अमरत लिया गिनानी ।।
बिन नासी का सांस सुवासा, बिन इंदरी रस भोगा ।
न कोई पाँच-पच्चीस से प्रगटा, ना कोई जोग-विजोगा ।।
नाम बिना एक नाम,निरमला, सतगुरू मोहे लिखाया ।
कहे कबीर नाम की महिमा, ज्ञानी वे सो पाया ।।

==========